iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH
IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 13 Issue: VII Month of publication: July 2025

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2025.72990

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue VII July 2025- Available at www.ijraset.com

‘श्री लाल शुक्ल का कथा साहित्य: बदलते परिवेष का जीवंत चित्रण’ (दस प्रतिनिधि कहानियों के सन्दर्भ में)

डॉ. सुबिया फैसल
रायपुर (छ.ग.)

शोध सार: हिन्दी साहित्य में अपना एक अलग स्थान रखने वाले श्रीलाल शुक्ल उन साहित्यकारों में से है जिन्होने अपनी कलम से समाज के हर पहलु को बारीकी से चिन्हित किया है। उनके साहित्य में न केवल मनोंरजन है बल्कि, समाज को बड़ी गहराई से समझने की दृष्टि भी है। जो हमें अपने आस-पास में घटित समाज की घटनाओं पर सोचने के लिए मजबूर कर देती है। प्रस्तुत शोध पत्र श्रीलाल शुक्ल की 10 प्रतिनिधि कहानियों का विष्लेषण प्रस्तुत करता है। इस सभी 10 कहानियों का चयन उनकी साहित्यिक उत्कृष्टता, सामाजिक प्रांसगिकता और आम-बोल चाल की भाषा शैली में अनूठी सीख देने वाली कहानियो के आधार पर किया गया है। जो शुक्ल जी के कथा साहित्य की विविधत और गहराई को प्रस्तुत करता है। यह कहानियाँ हमें ग्रामीण और शहरी जीवन की जटिलताओं मानवीय संबंधों की गहराई और सामाजिक विसंगतियों की कठोर वास्तविकता से परिचित कराती है।

बीज शब्दः- प्रतिनिधि कहानी, हिन्दी साहित्य, कथाकार, सामाजिक यथार्थ, मनोरंजन, विष्लेषण विविधता, गहराई, विसंगतियां, वास्तविकता।

I. प्रस्तावना

श्री लाल शुक्ल हिन्दी साहित्य के उन शीर्षस्थ रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से न केवल समाज की विसंगतियों और विड़बनाओं को उजागर किया, बल्कि मानवीय संवेदनाओं की गहराई को भी स्पर्ष किया। उन्होंने समाज के हर वर्ग के लोगों की समस्याओं संघर्षो और आंकाक्षाओं को अपनी लेखनी में स्थान दिया। शुक्ल जी की कहानियों में व्यग्य का तीखापन भी हैं जो व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखंड और अन्याय पर तीखे बाण चलाती है। प्रस्तुत दस कहानियों में सामाजिक विसंगतियों का चित्रण है, तो मानवीय संवेदनाओं की गहराई भी है, जो अपनी सरल और सहज भाषा से रचनाओं को जीवंत बनाती है।

दस प्रतिनिधि कहानियों के अन्तर्गत है, इस उम्र में, सुखांत, संपोला, दि ग्रेड मोटर ड्राइविंग स्कूल, भष्ट्राचार दंगा, सुरक्षा, यह घर मेरा नहीं, अपनी पहचान। “इन कहानियों के बारे में श्रीलाल शुक्ल स्वयं लिखते है कि” प्रतिनिधि कहानियों का चयन कुछ अहापोह का विषय था इस प्रसंग में मैंने उन्हीं कहानियों को तरजीह दी है जो मेरे कथा- संसार के वैविध्य का परिचय तो देती हैं साथ ही, जो पिछले वर्षों में पाठकों के बीच मुझे अधिक स्वीकार्य बनाने मे सहायक रही है।[1]

II. विवेचना

श्रीलाल शुक्ल हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख कथाकार है, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज की विसंगतियों ओर मानवीय संवेदनाओं को उजागर किया है। उनकी कहानियों में व्यंग्य और यर्थाथवाद का अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है।

सबसे पहले हम बात करेंगे ‘इस उम्र में’ कहानी से यह कहानी वृद्धावस्था के अनुभवों और जीवन के अर्थ को गहराई से छूती है। कहानी एक ऐसे व्यक्ति किट्टू जो, वृद्ध हो चुका है और वृद्धा अवस्था मे अपने अस्तित्व के बारे में सोचता है। मुख्य पात्र जो कि एक वृद्ध व्यक्ति है वह सेवानिवृत्त व्यक्ति है। अपने जीवन की सफलताओं और उपलब्धियों और असफलताओं पर विचार करता हुआ कहता है। “वह रूक - रूककर कहता रहा ” चष्में की ही बात नहीं। आंत उतर आती है, हर्निया ! प्रास्टेट भी शायद बढ़ा है...... पता नहीं। आपरेषन नहीं कराया! झमेला है। इस उम्र में सोचा, जो हजारों रूपये उस पर बेमतलब फुकते, वही बच्चों के काम आएंगें। ठीक है न” [2]

लेखक के पूछने पर उसने यह सब बताया। लेखक उसको उसका टूटा हुआ। चष्मा देते हुआ बोला “पर चष्मा तो आपको बनवाना ही पढ़ेगा। उस वृद्ध व्यक्ति ने फिर भी न में ही सर हिलाया और बोला “नहीं इस उम्र में वे ठीक कहते हैं, बेकार रूपिया फूंकने से क्या फायदा बच्चों के काम आएगा .... मेरे दो पोते भी हैं।”[3] यह मार्मिक और विचारोत्तेजक बाते सुनकर लेखक गहरी सोच में पड़ जाता है वह वृद्ध व्यक्ति को बताता है उसको ऐसी बात नही करनी चाहिए वह इस उम्र में भी बहुत कुछ कर सकता है पूरे समाज के लिए उपयोगी बन सकता है, लेकिन तभी वह वृद्ध व्यक्ति, लेखक से वही सवाल करता है कि “आप ने अपने आप को उपयोगी बनाया है क्या”

"मेरे साथ जो होगा, सो होगा, पर आप अभी अधेड़ है। आपके पास बहुत वक्त है।" लेखक जब यह बात सुनता है तो उसे अपनी बची हुई जिन्दगी का एक-एक क्षण बहुत कीमती लगने लगता है लेखक अपनी बची हुई जिन्दगी अब कोई खास उपयोग में खर्च करना चाहता है लेखक कहानी में आगे लिखता है कि "मैं दूसरों को सलाह दे रहा हूं कि विराट सम्भावनाओं वाले इस जीवन के बचे-कुचे समय को निकृष्टता के दलदल में धस जाने दो उन्हें अपनी भावी शवयात्रा की तैयारी में खपा दो।"[4]

अतः शुक्ल जी ने बढ़ती हुई उम्र के इस पड़ाव को मनोवैज्ञानिकता की गहराई से चित्रित किया है। शुक्ल जी की यह कहानी सरल भाषा के माध्यम से जिन्दगी की सच्चाई को उजागर करते हुए पाठकों को अपने अंत के बारे में सोचने पर मजबूर करती है।

कहानी सग्रह की दूसरी कहानी है 'सुखांत जीवन की वास्तविकता को इमानदारी से चित्रित करती है यह कहानी किसी काल्पनिक सुखद अंत के बजाय जीवन की मुष्किलों और चुनौतियों को स्वीकार करने का संदेष देती है। यह कहानी सीधे तौर पर यर्थाथ की अनगिनत समस्याओं को जैसे जातीगत भेद-भाव, लडकी के विवाह व दहेज की समस्या, प्रेम विवाह की समस्या तथा शराब के कारण अच्छे खासे घर के बिखरने की समस्या को उजागर करती है। "पिएंगे " मैनें नहीं में सर हिलाया वह बोला "मैं ब्राह्मण होकर पी रहा हूँ आप कायस्थ हैं। आपको पीने में क्या परेषानी है" मैनें कहा, आप ऊँची जाति के है। आपको सिर्फ अपने कुकर्मो से लड़ना है, मैं छोटी जाति का हूं। मेरी सारी ताकत तो इस हीनता से लड़ने में ही चली जाती है।"[5] इस कहानी में जीवन की मुष्किलों और चुनौतिय को स्वीकार करने का बहतरीन संदेष दिया है, इसमें बताया गया है कि हर किसी के जीवन मे परेषानियां आती है, परन्तु आप के नजरिये पर निर्भर करता है कि आप बिना विचलित हुए उस परेषानी से कैसे निपटते है।

इस संग्रह की तीसरी कहानी है 'संपोला' संपोला का अर्थ है छोटा सा सांप का बच्चा। कहानी के चिकित्सा विभाग के बहुत भ्रष्ट अफसर डॉ. जोगी बाबू की जो दवाओं की खरीदी वाले प्रखंड में लिप्त है "हर साल खरीद का बड़ा टेंडर खुलने के बाद जीतने वाले दवा कंपनी का प्रतिनिधि जोगी बाबू को सलाम करने आता और चलते-चलते बता जाता कि मेज़ पर रखा हुआ यह चाबी का गुच्छा और कागजात जोगी बाबू की नई कार के हैं। सलाना दस्तूर से जोगी बाबू अब तक एक मारूति और एक फिएट अपने दो दमादों को और एक दूसरी फिएट अपने इंजीनियर लड़के को दे चुके थे। इस साल उन्हें ठोस अफसरों वाली एम्बैसेडर कार मिली थी "[6] और इसी साल उनसे भ्रष्ट कारनामों की जांच भी शुरू हो गई थी वह परेषान थे पर अपनी पत्नि और बेटी को नहीं बता रहे थे, इसी बीच बेटी और पत्नी को कार में सैर करवाते हुए उनकी कार में संपोला चढ़ जाता है और खूब छानबीन के बाद भी उसका कुछ पता नहीं चलता। इधर जोगी बाबू अपनी तफतीष को लेकर परेषान थे की अब संपोला भी एक नई परेशानी बन चुका था। वह छानबीन कर रहे अफसर को खरीदना चाह रहे थे परन्तु अफसर बिकने वालों मे से नहीं था जोगी बाबू मन ही मन अब उस अफसर को जान से मारने का मन बना लेते है और तभी कार चलाते हुए उन्हें वह संपोला अपने आस-पास महसूस होता है और बड़ी दुर्घटना होती है जिसमें जोगी बाबू बुरी तरह घायल हो जाते हैं। इस कहानी में बुरे के साथ हमेषा बुरा होने वाली कहावत को सच होते दिखाया गया है।

"दि गैरंड मोटर ड्राविंग स्कूल" इस संग्रह की चौथी कहानी है। यह कहानी हमारे समाज में फैले भ्रष्टाचार और गैर-जिम्मेदार रवैये पर टिप्पणी करती है। कहानी में दिखावे झूठे वादो और आसान रास्तों की तलाष में भटकते लोगों की मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है कहानी में हास्यपूर्ण और व्यंग्यात्मक पात्र है, जैसे स्कूल का मालिक, प्रषिक्षक और प्रषिक्षण लेने वाला इंसान आदि। ड्राइविंग स्कूल का संचालन नियमों और कानूनों को ताक पर रखकर किया जाता है। स्कूल का प्रषिक्षक स्वयं ठीक से गाड़ी चलाना नहीं जानता, लेकिन वह गाड़ी चलाना सीखने वालो को लाइसेंस दिलाने का झूठा आष्वासन देता है। प्रषिक्षण के नाम पर खाना पूर्ति होती है "कुछ ऐसे सन्यासी होते हैं जो करोड़ो की लागत वाली संस्थाएं चलाते है, पर पैसा अपने हाथ से नहीं देते। उस्ताद भी कुछ-कुछ उन्हीं जैसे है। वे मोटर ड्राइविंग का स्कूल चलाते है पर गाड़ी के किसी कलपुर्जे को नहीं छूते।"[7] अतः कहानी उन भोले भाले लोगों की उम्मीदों और निराषाओं को भी दर्षाती है जो ड्राइविंग सीखकर रोजगार की तलाष में है। इस कहानी से शुक्ल जी ने सरकारी तंत्र की सुस्ती, निरीक्षकों की मिली भगत और आम आदमी की मजबूरी पर करारा व्यंग्य किया है।

पांचवी कहानी 'षिष्टाचार' में शुक्ल जी ने दिखावटी सामाजिक व्यवहार और उसके पीछे छिपी वास्तविकता को उजागर किया है। यह कहानी हमें सीख देती हैं की वास्तविक मानवीय संबंध शिष्टाचार के बहारी दिखावे से अधिक गहरे और सच्चे होने चाहिए कहानी में शिष्टाचार के नाम पर होने वाले आंडबर ओपचारिकता और वास्तविक मानवीय भावनाओं के आभाव पर व्यंग्य है।

'दंगा' इस संग्रह की छटी कहानी है यह कहानी सांप्रदायिकता या सामाजिक हिंसा के जटिल मुद्दों पर एक सूक्ष्म और विचारोत्तजक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। शुक्ल जी इस कहानी के माध्यम से पाठको को समाज में शांति और सद्भाव बनाए रखने के महत्व पर सोचने के लिए मजबूर करती है।

'सुरक्षा' कहानी इस संग्रह की सांतवी कहानी अपनी तीखी व्यंग्यात्मक शैली के लिए जानी जाती है। शुक्ल जी इस कहानी के माध्यम से समाज के डरपोक और संषायग्रस्त रवैये का मजाक उड़ाते है। इस कहानी में लोगों की सतर्कता और हर चीज में खतरा देखने की आदत को शुक्ल जी ने एक अलग ढंग से प्रस्तुत किया है यह कहानी मन पर पड़ने वाले प्रभाव का गहराई से अध्ययन कराती है और बताती है कि कैसे बेवजह का डर लोगो को तर्कहीन बना देता है, और तभी अविश्वास और अलगाव की भावना असुरक्षा को जन्म देती है। कहानी में एक जगह सरकारी कार्यो में लेट लतीफी को भी चित्रिण किया गया है। " मि. टंडन ने सड़क पर वक्त के पहले से ही घिर आए अंधेरे को देखकर कॉरपोरेषन वालों को फोन किया कि उनके उधर की स्ट्रीट लाइट तुरंत जलनी चाहिए। पर उन्होनें सलाह दी कि उन्हें बिजली कंपनी के पथ प्रकाष विभाग को फोन करना चाहिए

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue VII July 2025- Available at www.ijraset.com

और बिजली कंपनी के उपर्युक्त विभाग ने उन्हें बताया कि मामला पेचीदा है, कि किसी ठेकेदार के बिल का भुगतान नहीं हुआ है, कि ट्रासमीषन लाइनों में कोई गडबड़ी है जिसे ठीक होते-होते आठ-दस दिन लग जाएगें।"[8] सुरक्षा कहानी आज के समय में प्रांसगिक है जो हमें अपने आस-पास के माहौल में व्याप्त डर और सुरक्षा की चिंता से सोचने पर मजबूर करती है।

'छुट्टियां' इस संग्रह कि आठवीं कहानी है। कहानी में कॉलेज के दो शिक्षकों के आपसी मेल मिलाप को दिग्विजय नामी कॉलेज का गुण्डा समझा जाने वाले छात्र के हाथों कुछ फोटू लगजाते है जो कि पहले से शादीशुदा शिक्षक और शिक्षिका शर्मिला को अपनी बहन के नंबर बढ़वाने के लिए ब्लेकमेल करता है। वह शिक्षिका को फोन पर धमकी देता है। वही फोन पर ही शिक्षक को भी फोटोओं का हवाला देकर विनम्रता के साथ समझाता है "एक बात समझलो गुरूजी ! लड़की का नाम उर्मिला है। बी.ए. फाइनल। रोल न. भी लिखले ....समाजशास्त्र का दूसरा पर्चा कम से कम पैसठ फीसदी नंबर मिले तो काम बनेगा। आप सुनिता शर्मा से कहदे उन्होनें कम नंबर दिये तो मेरी बहन फेल हो जाएगी"[9] कहानी में सरल शब्दों में कॉलेजों की छुट्टियों में होने वाले कार्यों को बड़ी सरल भाषा में चित्रित किया है। भ्रष्टाचार किस हद तक हमारे समाज में अपनी जड़ों को जमा चुका है इस बात को भी प्रस्तुत किया गया है। कहानी अवकाष के समय की वास्तविकता और मानवीय स्वभाव के विरोधाभासों को बड़ी सच्चाई से उजागर करती हुई छुट्टियों के इंतजार और उसके बाद होने वालों निराषा के अनुभवों के आस-पास घूमती है।

'यह घर मेरा नहीं ' इस संग्रह की नौवीं कहानी है। यह कहानी आधुनिक समाज में व्यक्ति की पहचान, अलगाव और स्वामित्व के बदलते अर्थो पर विचार करती है। इस कहानी में आधुनिक जीवन की विडबनाओं को भी चित्रित किया गया है। जहां भौतिक सुख सुविधा तो है। परन्तु भावात्मक जुड़ाव और स्थायी रिश्तों की कमी महसूस होती है। आज के समय की यह कहानी एक पिता पुत्र के संबंधों को दर्शाती है जिसमें जरूरत से ज्यादा बच्चों पर सख्ती को चित्रित किया गया है पिता कि सख्ती और कठोर व्यवहार से बच्चों की मानसिक और शारिरिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी इस कहानी में चित्रित किये गये है। एक चिट्ठी पुत्र अपने पिता को लिखते हुए कहता है "आपसे कुछ कहने की हिम्मत नहीं होती। कैसे, किस भाषा में कहूं न मुझे अंग्रेजी का लफ्ज आता है न हिन्दी का न तेलगु का इसलिए गूंगों की तरह मुझे लिखकर बात करनी पड़ती है। मेरी समस्याएं आप जानते है। पर सब जानकर भी आप मुझ पर क्यों बिगड़ा करते है, लोग कहते है कल मुझे इस युग का इस देश का दायित्व लेना होगा। फिर वही फरेब! जो वर्तमान के ऊपर छाए है। भविष्य पर उन्हीं के प्रेत मंडरायंगें। यह युग मेरा नहीं होगा। "यह घर भी मेरा नहीं। यहां सिर्फ आप रह सकते है। मैं नही रहूंगा मैं यह घर छोड़ कर जा रहा हूं। मेरा यही भविष्य है।"[10] अतः इस कहानी में आम आदमी के आंतरिक खालीपन को शुक्ल जी ने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। आज के समय में बच्चों पर हर दिषा से दिये जा रहे दबाव उनको मानसिकता को कैसे प्रभावित कर रहे है वह अपने परिवेश में बेगाना महसूस कर रहा है। यह कहानी उपभोक्तावादी संस्कृति और व्यक्ति के मशीनीकरण पर भी अप्रत्यक्ष रूप से टिप्पणी करती है।

दसवीं कहानी 'अपनी पहचान' आधुनिक जीवनशैली में व्यक्ति की पहचान के महत्व पर जोर देती है। कहानी एक ऐसे व्यक्ति के आंतरिक द्वंद्ध और पहचान के संकट को प्रस्तुत करती है। जो भीड़ में अपनी व्यक्तिगत पहचान को बनाये रखने में संघर्ष कर रहा है। इस संघर्ष के साथ -साथ शुक्ल जी ने पढ़े लिखे नौकरी करने वाले व्यक्ति मनोहर को एक अभिमानी आधुनिक सोच वाले व्यक्ति जो सीधे माथे बात नहीं करता उसकी बात सुनकर दूसरा व्यक्ति अपने मित्र को सलाह देता है कि "देख बे, उस छोकरे को इंट्रेस न पास करा, नहीं तो वह भी बाबू बनकर अपने लोगों से अलग हो जाएगा। तनख्वाह मिलेगी साले को सत्तर रूपल्ली, पर समझेगा कि वह तुझसे हजार गुना ऊंचा है, वह नकल करेगा अफसरों की सेठ-साहूकारों की"[11], कहानी का मुख्य विषय आधुनिक समाज में व्यक्ति की पहचान का संकट है। यह कहानी बताती है कि कैसे एक व्यक्ति सामाजिक दबावों और अपेक्षाओं के बीच अपनी मौलिकता और विशिष्टता खो देता है।

III. निष्कर्ष

शुक्ल जी की कहानियों में भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता, पाखंड और अन्य विसंगतियों पर तीखा व्यगं्य किया गया है। उनकी अधिकतर कहानियों में मानवीय स्वभाव की कमजोरियों, स्वार्थ ईर्ष्या और विरोधाभासों को बड़ी बारीकी से चित्रित किया गया है। इसके साथ -साथ सरकारी और सामाजिक व्यवस्था की खोखली और अप्रभावी कार्यषैली पर भी व्यंग्य कसा गया है। आम आदमी के दैनिक जीवन के संघर्ष उनकी आषाएं -निराषाएं भी बड़ी मार्मिक ढंग से शुक्ल जी ने लोक तत्वों के सुंदर मिश्रण और विषिष्ट व्यग्यात्मक शैली को भी प्रस्तुत किया है। यह कहानी संग्रह समाज में सामाजिक चेतना और संवेदनशीलता जगाकर अपने आसपास की दुनिया को अधिक आलोचनात्मक और मानवीय दृष्टिकोण से देखने के लिए जहां प्रोत्साहित करेगा, वहीं बुराइयों पर सोचने और सवाल उठाने के लिए भी प्रेरित करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1] शुक्ल श्रीलाल, 'दस प्रतिनिधि कहानियां', किताब- घर प्रकाषन नयी दिल्ली, 2018 , पृष्ठ सं. - भूमिका।
[2] 'वही' "कहानी - इस उम्र में", पृष्ठ संख्या – 20
[3] 'वही' "कहानी - इस उम्र में", पृष्ठ संख्या – 21
[4] 'वही' "कहानी - इस उम्र में", पृष्ठ संख्या – 22

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue VII July 2025- Available at www.ijraset.com

[5] 'वही' "कहानी - सुखंात", पृष्ठ संख्या – 33
[6] 'वही' "कहानी - सपोला", पृष्ठ संख्या – 39
[7] 'वही' "कहानी - द ग्रैंड मोटर ड्रायविंग स्कूल, पृष्ठ संख्या – 56
[8] 'वही' "कहानी - सुरक्षा", पृष्ठ संख्या – 82
[9] 'वही' "कहानी - छुट्टियां ", पृष्ठ संख्या – 103
[10] 'वही' "कहानी - यह घर मेरा नहीं", पृष्ठ संख्या – 117
[11] 'वही' "कहानी - अपनी पहचान", पृष्ठ संख्या - 123

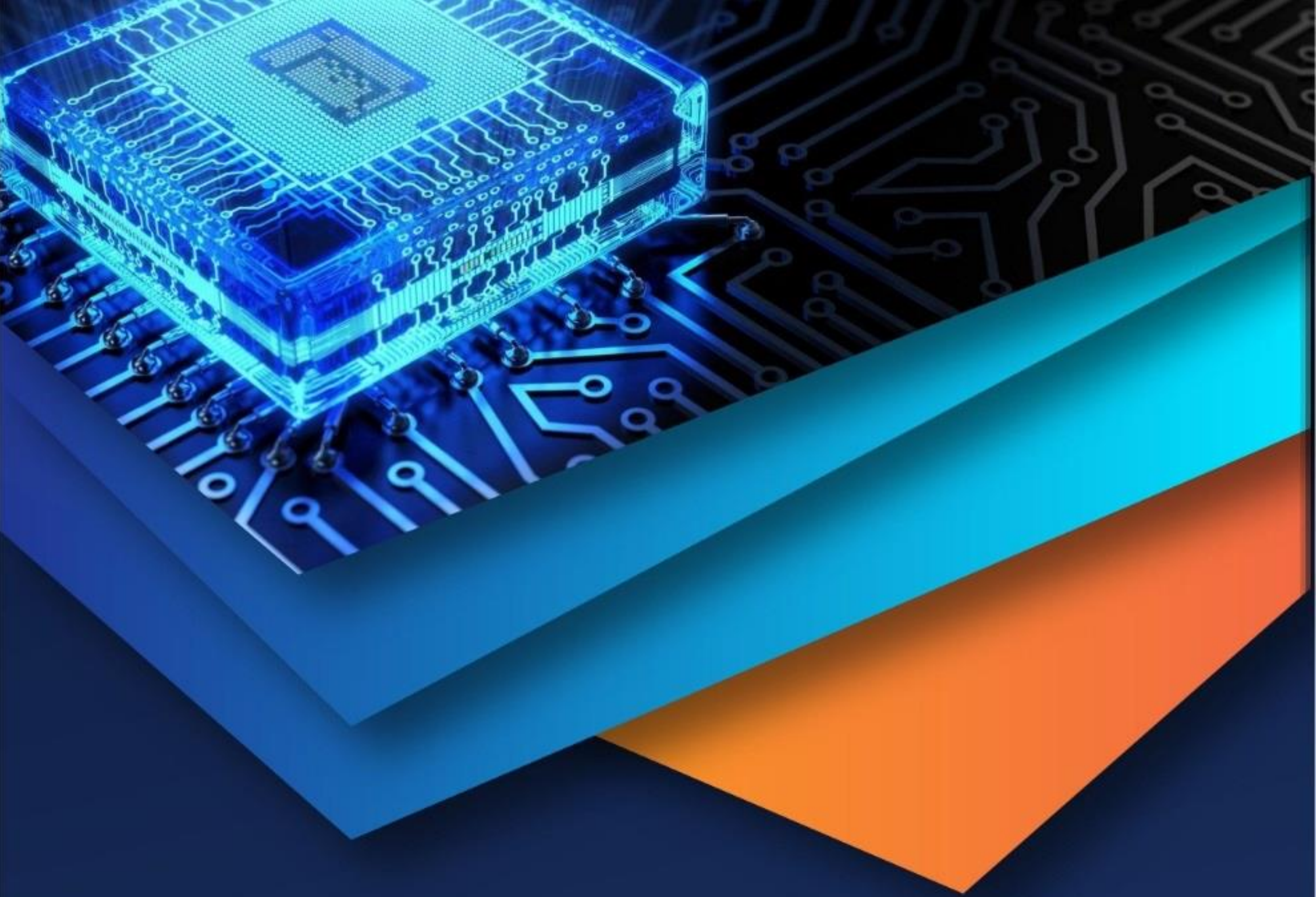

10.22214/IJRASET

INDEX COPERNICUS

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

TOGETHER WE REACH THE GOAL

IMPACT FACTOR: 7.429

ISI

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)